से, केवल, छोटी सुनवाई के माध्यम से उन लोगों को सजा देने का प्रावधान किया जाना चाहिए। **(समय की घंटी)** आवश्यकता पड़े तो कानून में भी संशोधन किया जाना चाहिए

आपने जो मुझे बोलने का अवसर दिया, उसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

Deteriorating Communal situation due to Activities of certain Political Parties Organisations

डा० रत्नाकर पाण्डेय (उत्तर प्रदेश): माननीय उपसभापति जी, आपने मुझे भारतीय जनता पार्टी, विश्व हिंदू परिषद्, बजरंग दल, राष्ट्रीय स्वयं सेवक दल और शिव सेना आदि, जो सांप्रदायिकता प्रधान राजनीतिक पार्टियां हैं **(व्यवधान)** उनके द्वारा राम जन्म-भूमि के प्रधान पुरोहित बाबा लाल दास को हटाने तथा वाराणसी और मथुरा के विवादित हिन्दू-मुस्लिम पूजा स्थलों की मुक्ति और मध्य प्रदेश में वहां की सरकार भारतीय जनता पार्टी द्वारा क्रिश्चियन आदिवासियों को जबरन हिन्दू बनाए जाने से उत्पन्न सांप्रदायिक तनाव के संबंध में मुझे विशेष उल्लेख करने का आपने मौका दिया है इसके लिए मैं कृतज्ञ हूं। शिवरात्रि के दिन वाराणसी में जो मस्जिद बनी हुए वहां के विवादित स्थल पर जल चढ़ाने का उपक्रम 70 बजरंग दल के लोगों ने किया और तनावपूर्ण वातावरण हुआ। लाखों लोग वहां शंकर जी का दर्शन करते हैं काशी विश्वनाथ का और उसमें मुस्लिमों के विवादित स्थल पर जल चढ़ाने का उपक्रम करके जो घोर सांप्रदायिक तनाव फैलाया उसको हमारे बनारस के अधिकारियों ने जिस खूबी के साथ बचा लिया उसके लिए इस सदन की ओर से मैं उनको बधाई देना चाहता हूं। वहां भी उत्तर प्रदेश में बी०जे०पी० की सरकार है। उसके इशारे पर और वहां के* जो विश्व हिन्दू परिषद् के उपाध्यक्ष रहे हैं, उनके इशारे पर यह सब हो रहा है। महोदया, इतना ही नहीं राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सर कार्यवाहक श्री सुदर्शन जी ने 7 मार्च, 1992 को लखनऊ में एक संवाददाता सम्मेलन में कहा कि राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ अयोध्या के साथ ही मथुरा और वाराणसी के पवित्र धर्म स्थलों की मुक्ति का संकल्प दोहराता है और अयोध्या में जो राम मंदिर का निर्माण हो रहा है उसमें न्यायालय द्वारा निर्णय हो जाने से रोक हट जाने के बाद हम उसका निर्माण करेंगे। इस तरह से श्री सुदर्शन ने कहा कि केन्द्र में भारतीय जनता पार्टी की सरकार न होने के कारण राम मंदिर निर्माण में बाधा पड़ रही है। इतना ही नहीं उन्होंने अभी कहा कि ओवरसीज़ बी०जे०पी० क्या कर रही है इस देश में सरकार उस पर ध्यान दे। 28 अगस्त को फ्रैंकफर्ट में इनका अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दू सम्मेलन हो रहा है और आगे वाशिंगटन में अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दू सम्मेलन कर रहे हैं। शिकागो में स्वामी विवेकानंद के नाम को बदनाम करने के लिए भारतीय जनता पार्टी उनकी जयन्ती के बहाने सांप्रदायिकता की आग जलाना चाहती है और ओवरसीज़ बी०जे०पी० जो है वह बराबर विदेश के पैसे से चाहे विश्व हिन्दू परिषद हो, चाहे बजरंग दल हो, चाहे शिव सेना हो चाहे भारतीय जनता पार्टी हो, चाहे राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ हो, यह सब मिल करके माननीया उपसभापति महोदया, इस देश में सांप्रदायिकता की आग भड़काना चाहते हैं। इतना ही नहीं, अभी....**(व्यवधान)**

श्री लक्खीराम अग्रवाल (मध्य प्रदेश): पाण्डेय जी यह बोफोर्स का पैसा नहीं है।....**(व्यवधान)**

डा० रत्नाकर पाण्डेय: अभी....**(व्यवधान)*** आपकी पार्टी चल रही है और सी०आई०ए० जो पैसा देती है ...**(व्यवधान)** ... 600 करोड़ रुपये का विश्व हिन्दू परिषद के, आज तक आपने हिसाब नहीं दिया। आप विश्व हिन्दू परिषद के 600 करोड़ रुपये के पैसे का हिसाब दो। देश की जनता विश्व हिन्दू परिषद का जो 600 करोड़ रुपया आया है उसका हिसाब चाहती है ... **(व्यवधान)**

डा० जिनेन्द्र कुमार जैन (मध्य प्रदेश): भ्रष्टाचार में डूबा हुई....**(व्यवधान)**

डा० रत्नाकर पाण्डेय: आपने ढील दिया....**(व्यवधान)** अपने ही देश में बी०जे०पी० के अध्यक्ष जब से आए आप सत्ता का दुरुपयोग कर रहे हैं ...**(व्यवधान)**

डा० जिनेन्द्र कुमार जैन: देशभक्ति के काम को भाग ऐसी बात करते हैं, आपको शर्म आनी चाहिए, पाण्डेय जी ... **(व्यवधान)**

श्री लक्खीराम अग्रवाल: बोफोर्स के नाम पर खाया, बोफोर्स के नाम पर देश को लूटा। राजीव गांधी का परिवार ... **(व्यवधान)**

डा० रत्नाकर पाण्डेय: राजीव गांधी अगर ईमानदार नहीं है तो इस देश में एक व्यक्ति भी ईमानदार नहीं है।....**(व्यवधान)**

श्री लक्खीराम अग्रवाल: आप सारी तोपें खा गए। ...**(व्यवधान)** बोफोर्स की तोप खा गए।

डा० जिनेन्द्र कुमार जैन: भारतीयता का ... **(व्यवधान)** इसके लिए शर्म आनी चाहिए आपको, आप भारतीयता का अपमान करना चाहते हैं ... **(व्यवधान)** भारतीयता का अपमान करना ... **(व्यवधान)**

श्री सुरेश पचौरी (मध्य प्रदेश): मैडम, मेरा निवेदन यह है कि बोफोर्स के संबंध में माननीय सदस्य जी ने जिनका नाम उल्लेखित किया है उसको प्रोसीडिंग्ज़ से हटाया जाए।

*Expunged as ordered by the Chair.

श्री लक्खीराम अग्रवाल: भारतीय जनता पार्टी को दिए हैं, कैसे कह दिया?....(**व्यवधान**)

डा० रत्नाकर पाण्डेय: आप टेलिविजन स्टूडियो चला रहे हैं, आप किस मुंह से* की बात कर रहे हैं?

डा० जिनेन्द्र कुमार जैन: विवेकानन्द जी के नाम जो भी आप शर्मनाक समझते हैं, आपको शर्म आनी चाहिए....(**व्यवधान**) विवेकानन्द जी इस भारत की प्रतिठा के प्रतीक हैं....(**व्यवधान**)

डा० रत्नाकर पाण्डेय: कहां जाएंगे क्रिश्चियन, कहां जाएंगे जैनी....(**व्यवधान**)

डा० जिनेन्द्र कुमार जैन: आपका दीन, ईमान बिल्कुल मर गया है। विवेकानन्द जी को आप....(**व्यवधान**)..कहते हैं, यह बड़े शर्म की बात है।

डा० रत्नाकर पाण्डेय: मैं * इस सदन के माध्यम से सारे देश में पर्दाफाश कर रहा हूं....(**व्यवधान**)...आपने अंग्रेजों का साथ दिया।

उपसभापति: पाण्डेय जी, प्लीज बैठिए। बैठ जाइए। पाण्डेय जी, मैं आपसे निवेदन करूंगी और आपसे भी निवेदन करूंगी और मेरे दाएं और बाएं और सामने बैठे हुए सभी लोगों से कि हाउस में बजाय इसके कि आप इतनी जोर की आवाज में बात करें, वह अपना स्पेशल मेंशन बोल रहे हैं, आप को कुछ लगेगा तो आप भी स्पेशल मेंशन मांग लेंगे तो आपको भी बोलने देंगे... *(interruptions)*... Order. Pandeyji, please sit down...*(interurptions)*...Order, please.

डा० जिनेन्द्र कुमार जैन: स्वामी विवेकानन्द का अपमान इस सदन में नहीं हो सकता।

उपसभापति: किसने किया? स्वामी विवेकानन्द जी के बारे में अगर कुछ कहा है it will be removed from the record.

डा० जिनेन्द्र कुमार जैन: * पैसा मांगते हैं....(**व्यवधान**)...*....(**व्यवधान**)

डा० रत्नाकर पाण्डेय: आप देश की जनता को केवल मूर्ख बनाना चाहते हैं....(**व्यवधान**)

श्री लक्खीराम अग्रवाल: बनारस से बिस्तर-बोरिया बंध गया है, भारतीय जनता पार्टी जीती है बनारस से....(**व्यवधान**)...

DR. JINENDER KUMAR JAIN: *(interruptions)*... This is the standard of this debate. I repeat it...*(interruptions)*....

उपसभापति: बैठिए, प्लीज बैठ जाइए। पाण्डेय जी, आप भी जरा एक मिनिट बैठिए। Jayanthi Natarajanji, Pandeyji, please sit down....*(interruptions)*....Just keep quiet, I say. Jayanthi Natarajan, please sit down.... *(interruptions)*... I say, please keep quiet and I am taking the action. You sit down. Jayanthi, please sit down...... *(interruptions)*...Dr. Sahib, one minute. I will listen to everything, but the point is

डा० साहब, आप किसी मसले पर कितने भी एजीटेटेड हों, मगर अपना स्तर नीचे नहीं गिरना चाहिए। आप इस हिंदुस्तान के बड़े हाउस के मेंबर हैं, इस तरह के अल्फाज़ बोलना न आपको शोभा देता है और न हाउस को शोभा देता है।

...(व्यवधान)...

I will handle it from the Chair. I am doing it. Please take your seat.... *(interruptions)*... Jayanthi, please take your seat. I will handle it the way I want...*Interruptions)*...Please keep quiet.

SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN (Tamil Nadu): Madam, he should apologise ...*(interruptions)*...

उपसभापति: आप बैठिए, आप चुपचाप रहिए। इस हाउस की एक गरिमा है और उसे कायम रखना हरेक का फर्ज है। इसलिए आपने जो अल्फाज इस्तेमाल किए हैं, वह सही नहीं हैं। अगर आप माफी मांग लेंगे तो मेहरबानी होगी, माफी नहीं मांगेंगे तो हम रिकार्ड से निकाल देंगे।

DR. JINENDRA KUMAR JAIN: Madam, please listen to my full sentence... *(interruptions)*...

THE DEPUTY CHAIRMAN: I won't allow...

DR. JINENDRA KUMAR JAIN: Madam, please listen to my full sentence. I did not say a word against any Member...*(interruptions)*...I did not say a word against any Member or party ... *(interruptions)*

SHRI S.S. AHLUWALIA (Bihar): You cannot use that word against anyone... *(interruptions)*...

SHRI AJIT P.K. JOGI (Madhya Pradesh): You cannot use that word against anyone........*(interruptions)*...

SHRI V. NARAYANASAMY: Madam, you are allowing it?... *(interruptions)*... Are you agreeing with what he said?...*(interruptions)*...

THE DEPUTY CHAIRMAN: Mr.

*Expunged as ordered by the Chair.

Jain, you might not have used it against anyone. But the fact is that there are certain standards of language to be used in this House...*(interruptions)*...So, while I am presiding, 1 will not allow such words to come on the

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया: महोदया, यह खाली रिकार्ड की बात नहीं है। जिनेन्द्र कुमार जैन सदन से माफी मांगें। यह सदन से माफी मांगें।

श्री राम नरेश यादव (उत्तर प्रदेश): महोदया, इन्हें माफी मांगनी चाहिए।...**(व्यवधान)**...

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया: यह भारतीय संस्कृति के संरक्षक बोलने वाले अपने आपको, यह किस तरह की दुर्भावना रखते हैं और किस तरह की भावना, शब्दों का उपयोग यहां सदन में करते हैं। इन्हें माफी मांगनी पड़ेगी।...**(व्यवधान)**...

SHRI V. NARAYANSAMY: Madam, he should apologise to the House... *(interruptions)*...

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया: यह माफी मांगें सदन से।

श्री कैलाश नारायण सारंग (मध्य प्रदेश): लेकिन, पहले एक्सप्लेन करना पड़ेगा।...**(व्यवधान)**...

record... *(interruptions)*...

DR. JINENDRA KUMAR JAIN: Madam, I should be allowed to explain what I have *said...(interruptions)*...

THE DEPUTY CHAIRMAN: Just a minute, please...*(interruptions)*...Just a minute, please...*(interruptions)*...You said it to the House... *(interruptions)*...

DR. JINENDRA KUMAR JAIN: But 1 should be allowed to explain what I have *said...(interruptions)*...

SOME HON. MEMBERS: No. *no...(interruptions)*...

SHRI S.S. AHLUWALIA: Madam, he should apologise to the House., *.(interruptions)*...

DR. JINENDRA KUMAR JAIN: Madam, I want to submit one thing...*(interruptions)...What* I want to say *is...(interruptions)*...\ should be allowed to explain what I have *said...(interruptions*-i...Should I say what I have *said'?...(interruptions)*...

THE DEPUTY CHAIRMAN: No, no, I wan't allow vou...*(interruptions)*...

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया: भारतीय संस्कृति को अपनी धरोहर समझते हैं और इस तरह के शब्दों का इस्तेमाल करते हैं सदन के अन्दर। यह सदन से माफी मांगें।...**(व्यवधान)**...यह जिनेन्द्र कुमार जैन यहां पर सदन से माफी मांगें।...**(व्यवधान)**...

DR. JINENDRA KUMAR JAIN: I should be allowed to explain what I have said...*(interruptions)*...

*Expunged as ordered by the Chair.

SHRI S.S. AHLUWALIA: We do not want his explaination. Madam. He should apologise to the House...*(interruptions)*...

SHRIMATI JAYANTHI NATRAJAN: Madam, he should apologise to the House-...*(interruptions)*...

THE DEPUTY CHAIRMAN: Just a minute...*(interruptions)*...Mr. Jain, I will not allow you to use such words in the House. You have to maintain the dignity of-the House and you should apologise...*(interruptions)*...

DR. JINENDRA KUMAR JAIN: May I explain?... *(interruptions)*...

SHRIMATI JAYANTHI NATRAJAN: There is no explanation after having called us as such... *(interruptions)*... You better apologise... *(interruptions)*...

DR. JINENDRA KUMAR JAIN: I will *not...(interruptions)*...

SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN: Madam, in the Madhya Pradesh assembly they criticized us like *this...(interruptions)*...\n the Madhya Pradesh Assembly, they abused the Congress(l) like this and in the Rajya Sabha they are calling *us., (interruptions)...The* BJP has made it a *habit...(interruptions)*...

THE DEPUTY CHAIRMAN: Just a minute , please...*(interruptions)*...

श्री सिकन्दर बख्त (मध्य प्रदेश): महोदया मैं अर्ज करूं।...**(व्यवधान)**...थोड़ी देर के लिए रुकें।...**(व्यवधान)**...

شری سکندر بخت : مہودیہ - میں عرض کروں ... "مداخلت" ... تھوڑی دیر کیلئے رکیں ..

SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN: Madam, they have accused us in the Madhya

श्री सिकन्दर बख्त: आनरेबिल मेम्बर साहिबा से मैं गुजारिश करूंगा। मैं अलफाज़ को ठीक से सुन तो नहीं सका हूं।...**(व्यवधान)**...

شری سکندر بخت : آنریبل ممبر صاحبہ سے میں گزارش کرونگا میں الفاظ کو ٹھیک سے سن نہیں سکا ہوں ... "مداخلت" ..

SHRIMATI, JAYANTHI NATARAJAN: He called us *"...(interruptions)*...

श्री सिकन्दर बख्त: प्लीज, एक मिनट रुकिए। आप इस तरह से ज्यादा बेताब न हों। लेकिन, अभी आनरेबिल मेम्बर ने यह फरमाया...**(व्यवधान)**...

شری سکندر بخت : پلیز ایک منٹ رکئیے - آپ اسطرح سے زیادہ بیتاب نہ ہوں - لیکن ابھی آنریبل ممبر نے یہ فرمایا ... "مداخلت" ..

श्रीमती कमला सिन्हा (बिहार): आपने भी सुना होता तो

Pradesh Assembly...*(interruntionsl*...

श्रीमति कमला सिन्हा (बिहार): आपने भी सुना होता तो आप को भी शर्म आती।

श्री सिकन्दर बख्त: अच्छा, खैर हो सकता है, मुझे आ जाएगी। मै आपकी खिदमत में हाजिर हो जाऊँगा अपनी शर्म को लेकर...(व्यवधान)...मै सिर्फ यह अर्ज करना चाहता हूं...(व्यवधान)...

شری سکندر بخت: اچھا خیر ہو سکتا ہے۔ مجھے آ جائیگی۔ میں آپکی خدمت میں حاضر ہو جاؤنگا اپنی شرم کو لیکر... "مداخلت" میں صرف یہ عرض کرنا چاہتا ہوں..

SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN: There is nothing to laugh about *it....(Interruptions)...*

SHRI SIKANDER BAKHT: Just a minute. You said that the BJP is making it a habit....*(Interruptions)...*

THE DEPUTY CHAIRMAN: Who said it?...(/n-*terruptions)..*

SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN: I said it *...(Interruptions)...*

श्री सिकन्दर बख्त: मै सिर्फ यह कहना चाह रहा हूं...(व्यवधान)...मै खाली यह कहना चाहता हूं कि वाकई क्या इस किस्म की कड़वाहटों को रोकने का सिलसिला आप अपने यहां भी कर सकते है? किसी भी बात को इब्तदा आफेन्सिव तरीके से की जाती है। क्या मतलब हुआ।...(व्यवधान)...सुनिए, तशरीफ रखिए। मुझे किसी भी लफ्ज के वापिस लेने में कोई एतराज नहीं है। चूंकि यह बहस का मुद्दा नही हो सकता। ...(व्यवधान)...तशरीफ रखिए। मेरी गुजारिश सुनिए। ...(व्यवधान)...आप बैठ जाइए लक्खीराम जी। मेरी गुजारिश है, किसी भी लफ्ज के वापिस लेने में मुझे कोई झिझक नहीं है क्योंकि कोई लफ्ज उसके लिए ज़िद का मुद्दा नहीं बनाया जा सकता है। लेकिन, यहां तक आफेन्सिव बात करने का ताल्लुक है, मैं आपसे मोअद्दबाना दरख्वास्त करूंगा, मेहरबानी करके आप अपने मेम्बर साहबान को भी कुछ कहिए। ...(व्यवधान)...बात शुरु ही आफेन्सिव करते है। आप वापिस ले लीजिए वह अल्फाज।

شری سکندر بخت: میں صرف یہ کہنا چاہ رہا ہوں... "مداخلت"... میں خالی یہ کہنا چاہتا ہوں کہ واقعی کیا اس قسم کی کڑواہٹوں کو روکنے کا سلسلہ آپ اپنے یہاں بھی کر سکتے ہیں۔ کسی بھی بات کی ابتدا آفینسیو طریقہ سے کیجاتی ہے کیا مطلب ہوا.... "مداخلت" سنئے تشریف رکھئے مجھے کسی بھی لفظ کے واپس لینے میں کوئی اعتراض نہیں ہے کیونکہ یہ بحث کا مدعا نہیں ہو سکتا... "مداخلت" تشریف رکھئے۔ میری گزارش ہے۔ کسی بھی لفظ کو واپس لینے میں مجھے کوئی جھجک نہیں ہے کیونکہ کوئی لفظ اسکے لئے ضد کا مدعا نہیں بنایا جا سکتا ہے۔ لیکن جہاں تک آفینسیو بات کرنے کا تعلق ہے۔ میں آپ سے مؤدبانہ درخواست کرونگا۔ مہربانی کرکے آپ اپنے ممبران صاحب کو بھی کچھ کہئے... "مداخلت"... بات شروع ہی آفینسیو کرتے ہیں۔ آپ واپس لے لیجئے وہ الفاظ۔

*Expunged as ordered by the Chair.

SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN: What is he saying? *...(Interruptions)...*

डा० जिनेन्द्र कुमार जैन: मैडम, मैं अपने लीडर की आज्ञा मानते हुए शब्द वापस लेता हूं और आपसे यह फिर रिक्वेस्ट करना चाहता हूं कि जो मैंने कहा था, उसको मुझे कहने की इजाजत देनी चाहिए। ...(व्यवधान)...

श्री सिकन्दर बख्त: आप बैठ जाइए। उन्होंने वापिस ले लिया है, लेकिन मैं दोबारा दरख्वास्त करूंगा कि आफेन्सिव बातें करने के तरीके को बंद करिए इस हाउस में।

شری سکندر بخت: آپ بیٹھ جائیے۔ انہوں نے واپس لے لیا ہے۔ لیکن میں دوبارہ درخواست کرونگا کہ آفینسیو باتیں کرنے کے طریقہ کو بند کر دیجئے اس ہاؤس میں۔

डा० जिनेन्द्र कुमार जैन: हाउस के डेकोरम को मेन्टेन करने की सबकी जिम्मेदारी है, यह हमारी यूनिलेटरल जिम्मेदारी नहीं है कि ये लोग कुछ भी कहें और हम उस* को सुनें।

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया: महोदया, यह सिलसिला जो है कि एक बार* दें, दूसरी बार उसको वापिस ले लें, यह सिलसिला जारी नहीं रहना चाहिए। सदन में कोई ऐसी हरकत होती है तो उसके लिए माफी मांगनी चाहिए। उनको माफी मांगनी चाहिए सदन से।...(व्यवधान)...

SHRIMATI JAYANTHI

उपसभापति: आप अपनी जगह पर जाकर बोलें तो ज्यादा बेहतर होगा।

श्रीमती जयन्ती नटराजन: मैं अपनी जगह पर बोलती हूं तो आप सुनती ही नहीं।

NATARAJAN: Madam...

THE DEPUTY CHAIRMAN: I will make my observations if yon allow me to make my observations. I will do that if (he Members permit me to make my observations from the Chair. *(Interruptions)*

DR. JINENDRA KUMAR JAIN: Please *Men...(Interruptions)* Please listen to what I said. You have no patience to listen to me.

SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN: I have beard every word.

DR. JINENDRA KUMAR JAIN: You have tried to put words into my mouth. I still want the Chair to permit me to explain whatever I was trying to say. *(Interruptions)* I do not mean any disrespect. I would still request the Chair to permit me.

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया: महोदया, यह बहस का मसला नहीं है, इन्होंने जिन शब्दों का प्रयोग किया है...

उपसभापति: आप बैठिए। You please take your seat.

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया: उन शब्दों के प्रयोग के लिए इस सदन से उन्हें माफी मांगनी होगी। यह कोई तरीका नहीं है।

उपसभापति: आप बैठिए। बैठिए।

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया: इस सदन की गरिमा को....

उपसभापति: आप बैठ जाइए। बैठिए।

I said, you please sit down. If you want to handle the House, you are welcome to come and sit in the Chair and handle it. If you want me to handle, please take your seat and be quiet. *(Interruptions)* पाण्डेय जी, ज़रा आप एक मिनट बैठिए। तशरीफ रखिए।

SHRI V NARAYANASAMY: Madam...

THE DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Narayanasamy, please keep quiet.

SHRI V. NARAYANASAMY: Madam the point...

THE DEPUTY CHAIRMAN: I say, please keep quiet.

Dr. Jain, there are many issues which are discussed in this House and you may like them, you may dislike them, and you may reply in the same language. But there is a certain decorum of this House. We arc subjected to certain responsibilities, not as Chair alone but as Members also. There are certain words which we may not use. They might be in a dictionary also. There are certain phrases which you might be speaking anywhere, in the best of the places. But there are certain values we have to maintain ourselves. And in the spirit of that, your Leader said, you have withdrawn your word. But if you *say...(Interruptions)* Okay. If he says, he is sorry, you would not become small in anybody's eyes. If the Members feel, you say sorry, you will never do it.

SHRI MURASOL1 MARAN (Tamil Nadu): He has withdrawn.

DR. JINENDRA KUMAR JAIN: Madam, let me explain. *(Interruptions)* Just a minute. Madam, when a Member gets up to speak something in the House, he has a right to make his point. While I was speaking, 1 was interrupted. I was not allowed to say what I wanted to say...

THE DEPUTY CHAIRMAN: Just a minute. You were making your point without my permission.

DR. JINENDRA KUMAR JAIN: Please listen. Please let me say what I wanted to say.

THE DEPUTY CHAIRMAN: I will allow you to say what you want to say. But I want to mention one thing to you and to everyone. If anybody is making a point and if you have any objection, you take the permission of the Chair and raise your objection. You or the other Members just get up on both sides of the House without the permission of the Chair, and you expect the Chair to give you protection, to give you permission to explain? It is not possible. So, if you feel that your feelings were hurt by some allegation or some statement made by the Members, you could ask the permission, and as I said, you can repudiate the charges. But using certain words and phrases is not proper for the House. And that is all I want to tell you.

DR. JINENDRA KUMAR JAIN: Will you allow me now?

THE DEPUTY. CHAIRMAN: I will allow you. मैं आपको पूरा करने दूंगी।

DR. JINENDRA KUMAR JAIN: Madam, let me at the outset assure you and this hon. House that myself and my Party have greatest respect for the House. We have a code of ethics. And the BJP Members always adhere to the code of ethics. To give you one example...

SHRI S.S. AHLUWALIA: You feel sorry or not? You say that.

THE DEPUTY CHAIRMAN: Let him say a word and then...

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया: इनको एक वार्निंग देते हुए आगे के लिए रिस्ट्रिक्ट करवाइए।

THE DEPUTY CHAIRMAN: Let him say sorry in his own way; doesn't matter. He will say sorry. *(Interruptions)* Now, let *us...(Interruptions)* We have to run the House every day, not just today. Such happening should not take place in the House.

DR. JINENDRA KUMAR JAIN: Madam, let me explain my point. Now, India is a democratic country. In a democratic country, our Party has taken a clear-cut stand on nationalism. And certain issues which we plead, we have a right to place before this House.

THE DEPUTY CHAIRMAN: The matter is about the language in the House, not about nationalism.

DR. JINENDRA KUMAR JAIN: I gave a patient hearing and I request you to hear me.

THE DEPUTY CHAIRMAN: I allow you to speak. Members are agitated at a particular language or the word or the phrase you used.

DR. JINENDRA KUMAR JAIN: You kindly don't be agitated on what I am saying... *(Interruptions)*

SHRI S. S. AHLUWALIA: We don't want to listen to all that. We only want to know whether he is feeling sorry or not; just one word. ..*(Interruptions)*

DR. JINENDRA KUMAR JAIN: Members here are constantly interrupted; they are not allowed to have their say... *(Interruptions)*

SHRI S.S. AHLUWALIA: This is very bad... *(Interruptions)*

THE DEPUTY CHAIRMAN: I think we will decide that later on....

DR. JINENDRA KUMAR JAIN: They go out of way, and it is my duty as the BJP Member of Parliament not to allow them like this. I do not speak for myself. Yesterday, the DMK Members were not...

THE DEPUTY CHAIRMAN: We are not discussing

that.

DR. JINENDRA KUMAR JAIN: Yesterday, DMK Members were attacked and we protested against that also. The other day, there was attack on another Member and we protested against that also. We are for the decorum of the House but some Members have taken into their head to run and destroy the decorum of the House. I want to make it clear that as a dutiful Parliamentarian, I owe it to the House not to allow things which are not to be spoken in this House.... *(Interruptions).*

SHRI S. S. AHLUWALIA: That means he will bully everybody! This is too much... *(Interruptions)*

SHRI SYED SIBTEY RAZI (Uttar Pradesh): It is for the Chair...*(Interruptions)*

DR. JINENDRA KUMAR JAIN: Let them fight us in other ways but to abuse the BJP everytime...

THE DEPUTY CHAIRMAN: Dr. Jain, we have got other business now and we have to have the special mentions. Members were agitated not only on my right but a lady Member on the left also, and including myself. In my opinion also it was not called for and if you said it in anger, you would not become small if you feel sorry.

*Expunged as rdered by the Chair.

DR. JINENDRA KUMAR JAIN: It is not a question of saying something; it is a question of doing a duty. Some people are allowed to go scot-free after they make all kinds of baseless allegations. Shall we tolerate that? Yesterday they attacked DMK Members. Should we allow that? That day they attacked Mr. Raj Mohan Gandhi. Should we allow that?

THE DEPUTY CHAIRMAN: Don't stretch my patience any more. Don't stretch it too much. There have been instances in this House where on behalf of Members I have apologised from the Chair for things which I have not done. I have apologised. It does not really make you small; it. makes you big if you say "If the feelings of the people and the Members here are hurt, I am sorry."

DR. JINENDRA KUMAR JAIN: I have already done that.

श्री सिकन्दर बख्त: सदर साहिबा, एक मिनट। मैं यह अर्ज़ कर रहा हूं कि कुछ भी आफेंसिव नहीं कहना चाहिये। अल्फ़ाज की ज़िद नहीं है, सेंटिमेंट को हर्ट करने की बात नहीं है। उन अल्फ़ाज के लिये कोई पार्लियामेंट्री या अन-पार्लियामेंट्री होने का कोई पैमाना हो, तो शायद वह नहीं है। लेकिन वह बात न कहना ही मुनासिब थी, मैं मानता हूं। अपनी पार्टी के साथी की तरफ से मैं माफी मांगता हूं। ...(**व्यवधान**) लेकिन मेरी गुजारिश, मोअद्दबाना दोबारा से है कि आफेंसिव सिर्फ वर्ड्स नहीं होते हैं, आफेंसिव लब-व-लहज़ा भी होता है, आफेंसिव तरीक़ा भी होता है, सभी कुछ रोकना चाहिये। या फिर सिर्फ पार्लियामेंट्री अल्फ़ाज का जो पैमाना है नापने का, या सिर्फ उसमें नापना चाहिये। यह बात क्या हुई?

شری سکندر بخت : صدر صاحبہ - ایک منٹ میں یہ عرض کر رہا ہوں کہ کچھ بھی آفینسیو نہیں کہنا چاہئے - الفاظ کی ضد نہیں ہے سینٹیمنٹ کو ہرٹ کرنے کی بات نہیں ہے ان الفاظ کیلئے کوئی پارلیمنٹری یا ان پارلیمنٹری ہونے کا کوئی پیمانہ ہو تو شاید وہ نہیں ہے - لیکن وہ بات نہ کہنا ہی مناسب تھی میں مانتا ہوں - اپنی پارٹی کے ساتھی کی طرف سے میں معافی مانگتا ہوں ... مداخلت ... لیکن میری گزارش مودبانہ دوبارہ سے ہے کہ آفینسیو طریقہ بھی ہوتا ہے - سبھی کچھ روکنا چاہئے - یہ بات کیا ہوئی -

उपसभापति: थैंक यू सिकन्दर बख्त साहब। आपने यह बहुत अच्छा काम किया, इस हाऊस की गरिमा को कायम रखा। मैं बाकी मेम्बर्स से भी कहूंगी कि उन्हें अपनी जो बात कहनी है, वह इस तरीके से कहें

कि किसी की दिलआज़ारी नहीं हो, आपकी बात हो जानी चाहिये। अब आप बोलिये, जल्दी खत्म करें।

डा० रत्नाकर पाण्डेय: माननीय उपसभापति महोदया, भारतीय जनता पार्टी के नेता ने सदन से क्षमा-याचना कर ली है और ...(**व्यवधान**)

उपसभापति: आप अपनी बात करिए, उनकी क्षमा-याचना को छोड़िए।

डा० रत्नाकर पाण्डेय: महोदया, उसके लिए मैं उनहें बधाई देता हूं...(**व्यवधान**) महोदया, सिकन्दर बख्त जी के प्रति मेरे मन में ऊंची भावना है...(**व्यवधान**)

श्री कैलाश नारायण सारंग: यह कौन सा तरीका है इनका? हमारे लीडर ने माफी मांगी है हाउस से, रत्नाकर पाण्डेय से माफी नहीं मांगी...(**व्यवधान**) यह क्या तरीका है...(**व्यवधान**)

उपसभापति: प्लीज़ आप बैठिए...(**व्यवधान**) पाण्डेय जी, जो आपका स्पैशल मैंशन है, कृपया उसी पर बोलें। आप उनको बीच में मत लाइए।

डा० रत्नाकर पाण्डेय: माननीय उपसभापति जी, मैंने बताया कि बाबा लालदास जी को, अयोध्या के जो मुख्य पुजारी थे...(**व्यवधान**)

उपसभापति: वह तो आप बता चुके हैं, आगे बढ़िए।

डा० रत्नाकर पाण्डेय: महोदया, उनको किस तरह से हटा दिया गया। केवल राम मन्दिर ही नहीं बल्कि मथुरा की कृष्ण भूमि और बनारस के काशी विश्वनाथ मन्दिर को भी, जहां इस्लामिक कल्चर के लोगों ने मस्जिद आदि बनाई, उन विवादित स्थलों पर जल चढ़ाकर और उन धार्मिक स्थलों को ढहाकर मन्दिर निर्माण की जो योजना इन दलों की चल रही है उस पर सरकार को अंकुश लगाना चाहिए। सबसे चिंता की बात यह है कि भारतीय जनता पार्टी के जो माननीय सदस्य यहां बैठे हुए हैं, बी०जे०पी० के अध्यक्ष और कोषाध्यक्ष, मेरा मतलब मध्य प्रदेश, भोपाल से है और भारतीय जनता पार्टी के उपाध्यक्ष और पूर्व सांसद दिलीप सिंह जूदेव ने घोषणा की है कि जो भाई मिशनरियों द्वारा धर्म परिवर्तित किए गए थे...(**व्यवधान**)

SHRI SIKANDER BAKHT: Madam, how can he take the name of a person who is not here to defend himself? What is this?

उपसभापति: पाण्डेय जी, उन्होंने जो आब्जैक्शन रेज किया है वह यह है कि हम उन नामों का प्रयोग यहां नहीं करते हैं जो यहां अपने को डिफेंड नहीं कर सकते है।

डा० रत्नाकर पाण्डेय: मैडम, यह अखबारों में छपा है...(**व्यवधान**)

उपसभापति: जहां मैंने गरिमा की बात की, वहां जो नियम हैं, उनकी भी बात की।

डा० रत्नाकर पाण्डेय: वे लोग पुनः हिंदू धर्म स्वीकार करेंगे। महोदया, दिलीपसिंह जूदेव छत्तीसगढ़ के ओडिसा और बिहार सीमा से लगे रायगढ़ जिले के कुम्भीचुहा गांव में 24 मार्च को 4 हजार से अधिक आदिवासी, जो क्रिश्चियन हैं, उनको हिंदू धर्म में परिवर्तित करने की योजना चला रहे हैं। महोदया, इसके पहले उन्होंने 14 जनवरी, 1992 को 900 लोगों को बलात क्रिश्चियन से हिंदू धर्म में परिवर्तित किया...(**व्यवधान**)

DR. JINENDRA KUMAR JAIN: Madam, will you allow me a point of order?

डा० रत्नाकर पाण्डेय: महोदया, अगर भारतीय जनता पार्टी की सरकार है तो वह शासन करने के लिए है, धर्म परिवर्तन करने और भारत को हिंदू राष्ट्र बनाने के लिए नहीं है। इसलिए मैं आपके माध्यम से मांग करूंगा कि आप भारत सरकार को निर्देश दीजिए कि जो सांप्रदायिकता की आग भड़काकर भारतीय जनता पार्टी, बजरंग दल, विश्व हिंदू परिषद, सनातन धर्म सभा, दुर्गा वाहिनी, आदम सेना, शिव सेना के लोग हिंदू सांप्रदायिकता की अफीम इस देश को पिला करके नशे में रखना चाहते हैं और देश में सांप्रदायिकता की आग जला करके देश को अस्थिर करना चाहते हैं, कभी राम मन्दिर, कभी कृष्ण जन्मभूमि, कभी काशी विश्वनाथ मन्दिर के मामले को उठाकर इस देश के अल्पसंख्यकों के मन में एक भय की भावना पैदा करना चाहते हैं, इन पर सरकार को कड़ाई से रोक लगानी चाहिए।

महोदया, भारतीय जनता पार्टी, बजरंग दल, विश्व हिंदू परिषद, सनातन धर्म सभा, दुर्गा वाहिनी, आदम सेना, शिव सेना, जमाते इस्लामी, जे०के०एल०एफ०, खालिस्तान लिब्रेशन फ्रंट, ये दल इस राष्ट्र को तोड़ने में लगे हुए हैं। मैं मांग करता हूं कि इन सबको धार्मिक और सांप्रदायिक दल घोषित किया जाए और इनकी राजनीतिक हैसियत समाप्त कर दी जाए। कड़ाई के साथ इस काम को नरसिंह राव जी की सरकार को करना होगा नहीं तो देश टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा। महोदया, मैं मांग करता हूं कि मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश सरकार को तुरंत बरखास्त किया जाए क्योंकि करोड़ों लोगों का जीवन धर्म और सांप्रदायिकता के नाम पर...(**व्यवधान**)

उपसभापति: बस हो गया, बैठिए...(**व्यवधान**)

श्री कैलाश नारायण सारंग: और डा० पाण्डेय को विदाई पार्टी दे दी जाए...(**व्यवधान**)

THE DEPUTY CHAIRMAN: Shrimati Satya Bahin, I have not permitted you. Please sit down. *(Interruptions)* What is your point of order?

DR. JINENDRA KUMAR JAIN: I am on a point of order. The hon. Member has said about Adivasis. Secondly, he has used the words, 'conversion from Christianity to Hindus'. It is a matter of fact that Christianity is only 2000 year old. If the people.... *(Interruptions)*

डा॰ रत्नाकर पाण्डेय: बी॰जे॰पी॰ वाले वहां सत्ता का दुरुपयोग कर रहे हैं...

THE DEPUTY CHAIRMAN: There is no point of order. This is no point of order. It is a point of explanation. You can ask for a special mention and explanation tomorrow, not today. *(Interruptions).* No, there is no point of order. Yes, Shrimati Sarala Maheshwari.

श्री शंकर दयाल सिंह (बिहार): जैन साहब को मैं इतना ही कहना चाहता हूं कि काशी के इतने बड़े पंडित पं॰ रत्नाकर पाण्डेय को हिन्दू धर्म की व्याख्या न समझाएं, वह अच्छी तरह जानते होंगे...

THE DEPUTY CHAIRMAN: I am not permitting. Shrimati Sarala Maheshwari. *(Interruptions).*

THE DEPUTY CHAIRMAN: Nothing from now is going on record. I am not allowing.

DR. JINENDRA KUMAR JAIN:'

THE DEPUTY CHAIRMAN: I will not allow you like this. If you feel that you have to make an explanation, ask for an explanation and go ahead, not today. *(Interruptions).* I am not allowing any *spashtikaran.* *(Interruptions).*

अगर आपको लगता है कि मैंबर साहब कुछ गलत कह गए तो कल आप स्पेशल मैंशन मांग लीजिए और उस पर बोल दीजिए। इस तरह से टोका-टाकी करेंगे तो

therewill be no end to the discussion because definitely you are not going to like what he said and he is going to like what you say. *(Interruptions).* After my ruling nothing is going on record.

Shrimati Sarala Maheshwari.

SHRI JINENDRA KUMAR JAIN:*

Need to Celebrate Birth Centenary of Pandit Rahul Sankrityayan

श्रीमती सरला माहेश्वरी (पश्चिमी बंगाल): माननीय उपसभापति जी, मैं अपने विशेष उल्लेख के जरिए महापंडित राहुल सांकृत्यायन की जन्म शताब्दी की ओर आपका और इस सदन का ध्यान आकर्षित करना चाहती हूँ।

महोदया, लगभग 150 मूल्यवान कृतियों के रचयिता, 36 भाषाओं के ज्ञाता, प्रकाण्ड पंडित और हिन्दी के अमर साहित्यकार राहुल सांकृत्यायन भारतवासियों के लिए एक अत्यंत प्रिय और परिचित नाम है। राहुल सिर्फ एक लेखक ही नहीं थे, वे महायात्री थे। दुर्गम गिरी, कान्तर पथ को पार कर दूरदराज़ के क्षेत्रों के साथ सांस्कृतिक एकता के सूत्रों को खोजने वाले आधुनिक काल के वे एक महान् सांस्कृतिक दूत थे तिब्बत के दुर्गम क्षेत्रों, श्रीलंका, जापान, कोरिया, मंचूरिया, ईरान और सोवियत संघ तथा यूरोप के अनेक देशों तक उनका कार्य क्षेत्र फैला हुआ था।

इसके साथ ही राहुल के व्यक्तित्व को जो एक और सबसे उल्लेखनीय और महत्वपूर्ण पक्ष था वह था मेहनतकश जनता के प्रति उनकी गहरी प्रतिबद्धता और जुल्म तथा अन्याय के विरुद्ध अदम्य संघर्षशीलता। महापंडित का संपूर्ण व्यक्तित्व उनके कृतित्व की तरह ही हर न्यायप्रिय संस्कृतिवान व्यक्ति के लिए प्रेरणा का दीप स्तम्भ रहेगा।

राहुल जी का जन्म 9 अप्रेल, 1893 के दिन उत्तर प्रदेश के आजमगढ़ जिले के छोटे से गांव पंदहा के एक गरीब परिवार में हुआ था। पिता का नाम था गोवर्धन पांडे और मां का नाम कुलवन्ती देवी। परिवार की गरीबी और गांव की सीमाओं से सिकुड़कर रह जाने के लिए अभिशप्त इस जीवन ने अपने शैशव से ही उन सारी सीमाओं को तोड़कर दूर-दराज तक फैले विश्व के आयतन से अपने व्यक्तित्व को एकाकार कर देने का प्रण ले लिया था और 13 वर्ष की आयु में ही आजमगढ़ जिले की सीमा के पार जो कदम रखा तो फिर ज्ञान-विज्ञान की राह की असंख्य मंजिलें अनायास उन बढ़ते हुए कदमों के तले आती चली गई। लगातार लेखन, गहन शोध तथा सामाजिक क्रियाशीलता से तिल तिल कर बने उस व्यक्तित्व ने अपने साथ ही हमारे समाज को भी साधा और आज ऐसी पीढ़ियां मौजूद है जिन्होंनि राहुल के साहित्य से प्रेरणा लेकर अन्याय और जुल्म के विरुद्ध आवाज़ उठाने तथा चिन्तन को वैज्ञानिक आधार देने के प्रति सदैव निष्ठावान रहने के आदर्श को प्राप्त किया है। राहुल हमारे देश की आजादी के लिए तथा जात-पात और सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध समझौताहीन संघर्ष करने वाले एक अमर सेनानी थे। काशी की पंडित सभा ने उन्हे महापंडित की उपाधि दी। श्री लंका विद्यालंकार परिवेण में त्रिपिटकाचार्य की, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद ने साहित्य वाचस्पति की तथा भारत सरकार ने पद्मविभूषण की उपाधि से विभूषित किया था।

अप्रैल 1992 से मार्च 1993 तक का वर्ष इस महापंडित का जन्म शताब्दी वर्ष है। अपने इस विशेष

Not recorded.